Atheistic of Shatsa

वस्तुतः नास्तिकता सात्र के अस्तित्ववादी दृष्टिकोण की मान्यता है। सात्र को 'मानव' की व्याख्या में मानव-अनुभूति, अथवा मानव-चेतना से बाहर आने की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। उनके अनुसार विचार का प्रारंभ जन्म के साथ नहीं होता, सच पूछा जाए तो विचार की शक्ति के पनपने के बहुत पहले व्यक्ति को आत्म-अस्तित्व की चेतना हो जाती है। अतः हर प्रकार का विचार — ईश्वर विचार भी इस चेतना के बाद, इसी के अनुरूप सर्जित होता है। अतः प्राथमिक ईश्वर-चेतना नहीं है, प्राथमिक आत्म चेतना है, तथा बाद का हर वैचारिक विकास, जिसके अन्तर्गत ईश्वर-भाव भी आता है, एक रूप में मानव की अपनी प्राथमिक चेतना के अनुरूप बनायी हुई संरचना है।

इस मूल बात को ध्यान में रखते हुए हम सात्र की नास्तिकता को स्पष्ट करेंगे। इसके लिए प्रथमतः तो हम देखेंगे कि ईश्वर-भाव संरचित किस प्रकार होता है। सात्र ने यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि हम किस प्रकार ईश्वर-भाव तक पहुँचते है। इसी विश्लेषण में ईश्वर-भाव की अवास्तविकता भी स्पष्ट हो जाएगी। वैसे किसी-किसी स्थल पर सात्र ने कुछ ऐसी युक्तियाँ भी दी है जो 'ईश्वर-भाव' को स्पष्ट रूप में नकारती है। हम उनका भी संक्षिप्त में उल्लेख करेंगे। पहले हम यह देखें कि सात्र के अनुसार ईश्वर-भाव तक पहुँचने का ढंग क्या है। उनका कहना है कि ईश्वर का भाव भी कुछ उसी ढंग से बनता है, जिस ढंग से अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति का आभास होता है। सात्र का कहना है कि अपने अस्तित्व की चेतना में ही व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों की 'दृष्टि' की चेतना होती है। उसे यह प्रतीत होता है कि उसे भी 'देखा' जा रहा है — शायद उसी ढंग से देखा जा रहा है जिस ढंग से किसी भौतिक वस्तु को देखा जाता है। यह 'मैं' और 'अन्य' के संबंध की चेतना है।

इस चेतना की प्रतीति यह है कि यदि 'अन्य व्यक्ति' मेरे वातावरण के अंग हैं — यदि वे 'मेरे लिए' हैं तो 'मैं' भी उनके वातावरण का अंग हूँ, 'उनके लिए' हूँ। यह व्यक्ति की चेतना का विश्लेषण है। किन्तु कभी-कभी जब मस्तिष्क 'भाव एवं 'प्रत्ययों' में उलझ जाता है, तब वह इस पारस्परिक मानवीय संबंधों से अलग हो, इनके पीछे जाने का प्रयत्न करता है। वह विचार करता है। कि शायद 'कोई' भी है जो सभी व्यक्तियों के पीछे है, जो किसी व्यक्ति की दृष्टि का विषय नहीं है, तथा सभी व्यक्ति उसकी दृष्टि के 'विषय' हैं। साधारणतः तो हर व्यक्ति अन्य की दृष्टि का 'विषय' है ही, किन्तु हम सोच लेते हैं कि ~~एक~~ 'ऐसा' है जो किसी दृष्टि का विषय नहीं, फिर भी हर व्यक्ति उसकी दृष्टि के विषय है। ऐसे ही व्यक्ति का विचार ईश्वर-विचार है। किन्तु इसी विचार में स्खलन है।